© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

श्रीमद्भागवतपुराण में सांख्यदर्शन के 25 तत्त्वों का वर्णन

मोनिका यादव
(जे0आर0एफ0)
शोधच्छात्रा
संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सांख्यदर्शन

सम् उपसर्ग पूर्वक 'ख्या' (प्रकथने) धातु से अङ् प्रत्यय एवं टाप् प्रत्यय लगाकर संख्या शब्द बनता है। संख्या शब्द में तद्धित अण् प्रत्यय लगकर सांख्य शब्द निस्पन्न होता है, जिसका अर्थ है गणना से सम्बंधित या गणना द्वारा जानने योग्य।

इसके अतिरिक्त सम् + $\sqrt{}$ चक्षिङ् से सांख्य शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।

प्ररूष, प्रकृति और प्रकृति से उत्पन्न 23 तत्त्वों को मिलाकर कुल 25 तत्त्वों की संख्या होने के कारण ही इसे सांख्य कहा जाता है।

श्रीमद्भागवतपुराण में 'तत्वसंख्यान' के रूप में सांख्य को निरूपित किया गया है।

सांख्य के प्रणेता–

इस सेश्वर सांख्य की परम्परा ईसवी सन् के आरम्भ के कई शताब्दी के पूर्व की ज्ञात होती है और परम्परा से इसके प्रवर्त्तक महर्षि कपिल माने जाते हैं। ये आदि दार्शनिक थे। महाभारत के अनुसार ये ब्रह्मा के पुत्र थे[1] तथा दूसरे रूप में इन्हें अग्नि का अवतार बताया गया है।[2] विष्णुपुराण, वायुपुराण तथा पद्मपुराण में कपिल को विष्णु का अवतार माना गया है। गरूण पुराण में कपिल मुनि को सिद्ध प्रमुख कहा गया है।[3]

श्रीमद्भागवत पुराण में कपिल को विष्णु का अवतार तथा सांख्य प्रवर्त्तक के रूप में स्वीकार करते हुए कहा गया है–

एष मानवि ते गर्भं प्रविष्टः कैटभार्दनः।

अविद्यासंशयग्रन्थिं छित्त्वा गां विचारिष्यति।।[4]

अयं सिद्धगणाधीशः सांख्याचार्यैः सुसम्मतः।

लोके कपिल इत्याख्यां गन्ता ते कीर्तिवर्धनः।।[5]

सांख्य दर्शन में 25 तत्त्वों का वर्णन प्राप्त होता है। सांख्य शास्त्रों में तत्त्वों का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। सांख्य दर्शन द्वैतवादी दर्शन है। सांख्य में उल्लिखित 25 तत्त्वों का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है–

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।

षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्नविकृतिः पुरूषः।।

अर्थात्–

केवल कारण – प्रकृति है – एक है

कार्य कारण दोनों – प्रकृति–विकृति – सात हैं।

केवल कार्य है – विकृति – सोलह हैं।

न कार्य न कारण है – न प्रकृति न विकृति – एक है। – कुल 25 तत्त्व हैं।

प्रकृति ⟶ महत् (बुद्धि) ⟶ अहंकार ⟶ पंचतन्मात्राएँ (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) ⟶ एकादश इन्द्रियाँ (1. पंचज्ञानेन्द्रियाँ– श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण तथा 2. पंचकर्मेंद्रियाँ– वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ तथा उभयेन्द्रिय मन) ⟶ पंचमहाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, और पृथ्वी) तथा एक पुरूष।

श्रीमद्भागवतपुराण में 25 तत्त्व

1. **प्रकृति – ''प्रकर्षण क्रियन्ते यस्या सा प्रकृतिः''** इस जगत् का मूल उपादान कारण प्रकृति ही है। प्रकृति को सांख्य दर्शन में अव्यक्त कहा गया है– प्रकृतिः अव्यक्तम्। प्रकृति शब्द की उत्पत्ति है– ''प्रकर्षेण करोति कार्यमुत्पादयति इति प्रकृतिः'' अर्थात् जो अपने से भिन्न तत्त्वान्तरों को उत्पन्न करे वही प्रकृति है। भागवतपुराण में प्रकृति को जड़, अचेतन, अगोचर, माया, जगत्कर्त्री, गुणसर्गकर्त्री तथा प्रसव धार्मिणी कहा गया है। यह प्रकृति कार्य– कारणरूप से दो प्रकार की होती है–

प्रकृतिः पुरूषश्चो द्यौ यद्यप्यात्मविलक्षणौ।

अन्योन्यापाश्रयात् कृष्ण दृश्यते न भिदा तयोः।।[6]

मायामोहित जीव त्रिगुणातीत होने पर भी स्वयं को त्रिगुणात्मक मानकर दुःख भोगता है, माया ही उसे दुस्तर, प्रवृत्ति मार्ग में संयुक्त करती है, फलस्वरूप यह सात्त्विक, राजस, तामस, कर्मों का सम्पादन करता है, उन्हीं कर्मों के कारण जीव भयंकर भवार्णव में भटकता है। इस विश्व को माया की ही सृष्टि बताते हुए कहा गया है–

अथवा देवमायाया नूनं गतिरगोचरा।

चेतसो वचसश्चापि भूतानामिति निश्चयः।।[7]

अर्थात् माया को मन एवं वाणी से अनिर्वचनीय कहा गया है। भागवतपुराण में माया के स्वरूप को बतलाते हुए कहा गया है कि –

किं किं न विस्मरन्तीह माया मोहित गोचराः।

यन्मोहितं जगत्सर्वमभीक्ष्णं विस्मृतात्मकाम्।।[8]

प्रकृति के इस विवेचन से स्पष्ट है कि प्रकृति त्रिगुणात्मक है।

प्रकृति की सिद्धि–

सांख्यकारिका में प्रकृति की सत्ता सिद्ध करते हुए कहा गया है कि–

भेदानां परिमाणात्समन्वयाच्छक्तितः प्रवृत्तेश्च।

कारणकार्यविभागादविभागादैश्वरूप्यस्य।। सां0/15/

श्रीमद्भागवतपुराण में पुरूष तत्त्व–

भारतीय दर्शन में पुरूष के अस्तित्त्व को किसी न किसी रूप में स्वीकार किया गया है, ''मैं हूँ'' का बोध प्रत्येक व्यक्ति को होता है, पुरूष प्राणवान्, सजीव एवं संवेदनशील है। सांख्य में पुरूष को आत्मा कहते हैं। वेदों में पुरूष का वर्णन 'पुरूषसूक्त' में विशद रूप से किया गया है। कूर्म पुराण में पुरूष को बतलाते हुए कहा गया है–

यद्यात्मा मलिनोऽस्वच्छे विकारी स्यात् स्वभावतः।

न हि तस्य भवेन्मुक्तिः जन्मान्तरशतैरपि।। 2/2/12

भागवतपुराण में पुरूष शब्द आत्मतत्त्व का वाच्य है इसे चैतन्यस्वरूप, कूटस्थ्य, निरवयव, असंग, अपरिणामी, निरंजन, अनेक इत्यादि कहा गया है। पुरूष चेतन अर्थात् ज्ञानस्वरूप है। चेतना पुरूष का स्वभाव है। पुरूष को निर्गुण ब्रह्म बताते हुए कहा गया है–

धनुर्वियति माहेन्द्रं निर्गुणं च गुणिन्यभात्।

त्यक्ते गुणव्यक्तिकरेऽगुणवान् पुरूषो यथा।।[9]

भागवतपुराण में पुरूष शब्द आत्मतत्त्व का साम्य उस निर्विकार आकाश से किया गया है जिसमें मेघ, अन्धकार, और प्रकाश उद्भूत और अर्न्तभूत होते रहते हैं परन्तु आकाश उनसे अलिप्त ही रहता है। अतः यह पुरूष अविकारी है। बन्धन और मोक्ष प्रकृति के होते हैं पुरूष के नहीं, वह पूर्णतः कार्य कारण श्रृंखला से परे है।

सांख्यदर्शन में भी पुरूष की सिद्धि के 5 कारण बताये गये हैं–

संघातापरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।

पुरूषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।17।। सां0

श्रीमदभागवतपुराण में महत् (बुद्धि तत्व)–

सांख्य की प्रक्रिया के अनुसार प्रकृति से सर्वप्रथम महत् (बुद्धि) तत्त्व उत्पन्न हुआ। भागवतपुराण में प्रकृति से महत् तत्व को प्रथम माना गया है–

अयं तु ब्रह्मणः कल्पः सविकल्प उदाहृतः।

विधिःसाधारणो यत्र सर्गाः प्राकृतवैकृताः।।[10]

अर्थात् महाकल्प के प्रारम्भ में प्रकृति से क्रमशः महत्तत्त्वादि की उत्पत्ति होती है। इसे हिरण्यमय माना गया है। भागवतपुराण में महत् और बुद्धि तत्त्व को दो भिन्न तत्त्व माना गया है। इसके अनुसार महत् के विकार से अहंकार उत्पन्न होता है। बुद्धि प्रकृतिज होने के कारण अचेतन है। सांख्य दर्शन के अनुसार बुद्धि पुरूष या आत्मा के भोग का साधन है।

श्रीमदभागवत पुराण में अहंकार तत्व–

महत्तत्त्व के विकार से रजोगुण और सतोगुण की वृद्धि होती है और उससे तमोगुण प्रधान द्रव्य क्रियात्मक सृष्टि की उत्पत्ति होती है। इसी तत्त्व को ही अहंकार कहते हैं। अहंकार के वैकारिक, तेजस और राजस ये तीन भेद होते हैं। भागवतपुराण के अनुसार रजोऽधिक अहंकार ही इस बात का प्रतिपादक है कि बुद्धि में सत्त्व की प्रधानता है। इसलिए भागवतपुराण में बुद्धि का पर्यायवाची सत्त्व है।

श्रीमदभागवतपुराण में एकादश इन्द्रियाँ–

श्रीमद्भागवतपुराण में इन्द्रियों को अहंकार से उत्पन्न माना गया है। 10 इन्द्रियाँ, पंचमहाभूत और मन अहंकार से ही प्रादुर्भूत बताये गये हैं। सर्ग एवं प्रतिसर्ग के निरूपण में तन्मात एवं इन्द्रियवर्ग को अहंकार से युगपद् विकसित एवं उसमें प्रविष्ट बताया गया है। भागवत्पुराण में ज्ञान से ज्ञानेन्द्रियाँ, क्रिया से कर्मेन्द्रियाँ तथा द्रव्य से तन्मात्र विकसित माने गये हैं–

कर्तृत्वं कारणत्वं च कार्यत्वं चेति लक्षणम्।

शान्तघोरविमूढत्वमिति वा स्यादहंकृतेः।।[11]

श्रीमद्भागवत पुराण में 'मन'–

भागवतपुराण में मन को विकारिक रसात्त्विक अहंकार से उत्पन्न माना गया है तथा 'कर्मसंकल्पविकल्पं' कहकर उसके स्वरूप को बताया गया है भागवतपुराण में इसे अनिरूद्ध कहा गया है। इन्द्रियों द्वारा अनुभूत पदार्थ मन को ही समर्पित होते हैं। यह इन्द्रियों का अधिपति तथा नीले कमल की तरह श्याम वर्ण का है। मन इन्द्रियेश्वर है। भागवतपुराण में मन को चन्द्रमा की उपमा दी गई है–

सोमं मनोयस्य समामनन्ति दिवौकसां वै बलयन्ध आयुः। 8/5/34

परामवात्माश्रवणं तवात्मा सोमो मनो द्यौर्भगवांछिरस्ते।। 8/7/27

श्रीमद्भागवत्पुराण में 'पंचतन्मात्राएँ'

तामस अहंकार से भूतों के कारण शब्द की उत्पत्ति मानी गई है, चिच्छायोपचरित माया से स्पर्श तन्मात्र विकसित हुआ। वायु ने आकाश सहित विकृत होकर रूप तन्मात्र को विकसित किया, रूप से रस तथा रस तन्मात्र से गन्ध उत्पन्न हुआ।

श्रीमद्भागवत्पुराण में पंचमहाभूत

ब्रह्मा से लेकर पर्वत–वृक्ष पर्यन्त समस्त प्राणियों के मूलकारण के रूप में पंचमहाभूतों का कथन भागवतपुराण में प्राप्त होता है–

भूम्यम्ब्बग्न्यनिलाकाशा भूतानां पंच धातवः।

आब्रह्मस्थावरादीनां शरीरा आत्मसंयुताः।।[12]

महाभूतानि पंचैव भूरापोऽनिर्मरून्नभः।

तन्मात्राणि च तावन्ति गन्धादीनि मतानि मे।।[13]

तामस अहंकार के विकार से आकाश की सृष्टि हुई, आकाश तत्त्व में विकार होने पर वायु की उत्पत्ति हुई, वायु के विकार और कर्म काल तथा स्वभाव से रूपवान् तथा शब्द और स्पर्श गुण युक्त तेज की उत्पत्ति हुई, तेज के विकार से रसात्मक जल की उत्पत्ति हुई, जल के विकार से गन्धवती पृथ्वी उत्पत्ति हुई।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सांख्यदर्शन के स्वरूप व तत्वों का श्रीमद्भागवत पुराण में विस्तार से वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1.सनकश्च ..... ब्रम्हणः पुत्राः।। महाभारत/शान्तिपर्व
2.अग्निःस कपिलो नाम ..... प्रवर्त्तकः।। महा0/शान्तिपर्व
3.गरूण पुराण 1/18
4.श्रीमद्भागवत्पुराण 3/24/18
5.श्रीमद्भागवत्पुराण 3/24/19
6. श्रीमद्भागवत्पुराण 11/88/86
7. श्रीमद्भागवत्पुराण 1/17/23
8. भाग0 10/87/
9 भाग0 10/20/18
10 भाग0 2/10/46
11 श्रीमद् 3/26/26
12. श्रीमद् 11/21/5
13 श्रीमद् 3/26/12